जिसने बदली दिशा जगत् की,
धरती और आकाश की ।
जय बोलो ऋषि दयानन्द की,
जय सत्यार्थ प्रकाश की ।।

।। ओ३म् ।।

वर्ष - ५९ अंक - ०८
मूल्य : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १००) रु०
आजीवन - १०००) रु०
प्रतिमास ता० १३ को प्रकाशित

आर्य-संसार

श्रावण-भाद्र : सम्वत् २०७४ वि० अगस्त – २०१७

पं० रामनरेशजी मिश्र शास्त्री
(पृष्ठ १५ पर)

आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ

साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन

आर्य समाज कलकत्ता के साधारण सभा का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनांक ९.०७.२०१७ को प्रधान श्री सुरेश चन्द जायसवाल जी की अध्यक्षता में आर्य समाज कलकत्ता के सभागार में सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य समाज कलकत्ता तथा सम्बन्धित विभागों एवं ट्रस्टों का वार्षिक विवरण तथा आय-व्यय का लेखा-जोखा सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। वर्ष २०१७-१८ के लिए पदाधिकारियों और अन्तरंग-सभा के सदस्यों का सर्वसम्मति से निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ :-

प्रधान : श्री सुरेश चन्द जायसवाल।

उप-प्रधान : श्री अमर सिंह सैनी, श्री द्वारका प्रसाद जायसवाल, श्री छोटेलाल सेठ।

मंत्री : श्री दीपक आर्य।

उप-मंत्री : श्री कृष्ण कुमार जायसवाल, श्री मदनलाल सेठ, श्री रणजीत झा।

कोषाध्यक्ष : श्री ध्रुव चन्द जायसवाल।

हिसाब परीक्षक : श्री विनय कुमार आर्य।

पुस्तकालयाध्यक्ष : श्री सत्येन्द्र जायसवाल, श्री विवेक जायसवाल।

यज्ञ-व्यवस्था : श्री लक्ष्मीकान्त जायसवाल, श्री सुदेश जायसवाल।

अन्तरंग सदस्य : श्री श्रीराम आर्य, श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, श्री मनीराम आर्य, श्री अच्छेलाल सेठ, श्री सत्यप्रकाश जायसवाल, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री राजमणि वर्मा, श्रीमती कविता अग्रवाल, श्रीमती सुशीला दम्माणी।

अधिष्ठाता आर्य युवा-शाखा : श्री प्रभाकर सेठ।

प्रतिष्ठित सदस्य : पं० आत्मानन्द शास्त्री, पं० देवनारायण तिवारी, पं० नचिकेता भट्टाचार्य, पं० योगेशराज उपाध्याय, श्रीमती सुषमा अग्रवाल, श्रीमती सुषमा गोयल, श्रीमती सरोजिनी शुक्ला, श्री शिवकुमार जायसवाल, श्री नन्दलाल सेठ, श्री अच्छेलाल जायसवाल।

विशेष आमन्त्रित सदस्यः श्री अजय गुप्ता (एडवोकेट), श्री आशाराम जायसवाल, श्री संतोष सेठ, श्री हीरालाल जायसवाल, श्रीमती जानकी देवी झा, श्री आनन्द प्रकाश गुप्त, श्री निर्दोष अग्रवाल।

पदेन : श्री राजीव सरकार (टीचर इंचार्ज) रघुमल आर्य विद्यालय, श्रीमती लिपिका आदित्य (टीचर इंचार्ज) आर्य कन्या महाविद्यालय।

(शेष पृष्ठ २७ पर)

ओ३म्

आर्य-संसार

वर्ष ५९ अंक — ०८
श्रावण-भाद्र २०७४ वि०
दयानन्दाब्द १९३
सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११८
अगस्त — २०१७

आद्य सम्पादक
प्रो० उमाकान्त उपाध्याय
(स्मृति शेष)

सम्पादक :
श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
सहयोगी संपादक :
श्रीमती सरोजिनी शुक्ला
श्री सत्यप्रकाश जायसवाल
पं० योगेशराज उपाध्याय

शुल्क : एक प्रति १० रुपये
वार्षिक : १०० रुपये
आजीवन : १००० रुपये

इस अंक की प्रस्तुति

१. आर्य समाज कलकत्ता की गतिविधियाँ		२
२. इस अंक की प्रस्तुति		३
३. व्रत से सत्य तक का मार्ग (५४)	वेद-वीथिका से	४
४. वेद कहता है अन्तरिक्ष के ग्रहों पर एलियन रहते हैं	सुखदेव व्यास	७
५. गौ अर्थात् गाय	सुखदेव व्यास	९
६. स्वामी जी का स्वकथित जीवन-चरित्र	पं० लेखराम द्वारा संकलित	१०
७. सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का काव्यानुवाद	पं० देवनारायण तिवारी	१२
८. पं० रामनरेशजी मिश्र शास्त्री		१५
९. व्यास और युधिष्ठिर का प्रारब्ध के विषय में शिक्षाप्रद संवाद	खुशहाल चन्द्र आर्य	१६
१०. शिक्षित माता सदा प्रसन्नता देने वाली होती है	डॉ० अशोक आर्य	१८
९. संसार में सुख शान्ति का एकमात्र मार्ग उत्तम चरित्र निर्माण	पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'	२०
१०. सशस्त्र क्रान्ति के जाज्वल्यमान हस्ताक्षर-अमर शहीद सुखदेव	प्रो० ओमकुमार आर्य	२३
११. पुस्तक की सूची		२८

आर्य समाज कलकत्ता

१९, विधान सरणी, कोलकाता-७०० ००६

दूरभाष : २२४१-३४३९ ***email : aryasamajkolkata@gmail.com***

'आर्य संसार' में प्रकाशित लेखों का उत्तरदायित्व सम्बन्धित लेखकों पर है।
किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र कोलकाता ही होगा।

५४

व्रत से सत्य तक का मार्ग

व्रतेन दीक्षा माप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ।। यजु० १९-३०

शब्दार्थ :-

व्रतेन	= व्रत से, शुभ संकल्प से	दीक्षाम्	= दीक्षा को, क्रियात्मकता
आप्नोति	= प्राप्त करता है	दीक्षया	= दीक्षा से, कार्य से
आप्नोति	= प्राप्त करता है	दक्षिणाम्	= दक्षिणाको, सम्पत्ति, यश
दक्षिणा	= दक्षिणा से	श्रद्धाम्	= श्रद्धा को
आप्नोति	= प्राप्त करता है	श्रद्धया	= श्रद्धा से
सत्यम्	= सत्य को	आप्यते	= प्राप्त होता है

भावार्थ :-मनुष्य को व्रत करने से दीक्षा मिलती है । दीक्षा मिलने से दक्षिणा मिलती है । दक्षिणा से श्रद्धा का उदय होता है । श्रद्धा मिलने से सत्य प्राप्त हो जाता है ।

विचार विन्दु :

१. व्रत और दीक्षा की अवधारणा और महत्व ।
२. दक्षिणा से श्रद्धा कैसे आती है ?
३. श्रद्धा से सत्य पर विश्वास ।
४. व्रत से सत्य तक की यात्रा ।

व्याख्या

वैदिक संस्कृति में व्रत की बड़ी महिमा है । व्रत है शिव संकल्प, शिव संकल्प में दृढ़ता पूर्वक जुट जाना । वेद में परमेश्वर को व्रतपति अर्थात् व्रत का पालन पोषण करने वाला कहा गया है ।

प्रस्तुत मंत्र में सत्य के आचरण का एक मार्ग बताया गया हैं । मंत्र कहता हैं कि मनुष्य अपने जीवन में व्रत से आरम्भ करता है । व्रत होता हैं--शुभ-संकल्प में दृढ़तापूर्वक आचरण । हमने पौराणिक उपाख्यानों में कल्पवृक्ष का नाम सुना हैं । यह कल्प-वृक्ष तो एक मिथक है । किन्तु संकल्प-वृक्ष सचमुच कल्प-वृक्ष है । मनुष्य जब कोई शुभ-संकल्प करता हैं तो इसका अर्थ है कि वह अपने सामर्थ्य को अपनी योग्यता, साधन और सुविधा को उस कार्य के लिए इकट्ठा करता है और संकल्प का दूसरा चरण है-- दीक्षा, दीक्षा का अर्थ होता है - क्रियात्मक आचरण । आज विश्वविद्यालयों में दीक्षान्त के आयोजन किये

जाते हैं । वस्तुतः दीक्षा है--काम करने की ट्रेनिंग--काम करने का आचरण । जब मनुष्य दृढ़ता पूर्वक क्रियात्मक रूप से काम पर जुट जाता हैं तो उसे समाज की ओर से दक्षिणा भी मिलने लगती है, समाज में उसका सम्मान होता है । ये उन्नति की तीन क्रमबद्ध सीढ़ियां हैं । प्रथम व्रत, पुनः द्वितीय दीक्षा और तृतीय दक्षिणा । दक्षिणा का अर्थ धन और मान दोनों की प्राप्ति है । जब मनुष्य संकल्पपूर्वक कार्य में जुट जाता हैं तो लोग उसकी कार्यशीलता की प्रशंसा करते हैं और कार्य के बदले उसे धन भी मिलता हैं । धन बहुत अच्छा साधन हैं किन्तु धन बड़ा बुरा साधन भी है । प्रायः देखा जाता हैं कि धन आने पर लोगों का चाल-चलन, शील स्वभाव बिगड़ने लगता है । धन का यदि सदुपयोग हुआ तब तो वह सुपथ पर ले जायेगा, नहीं तो धन से कई लोग कुपथ की ओर बढ़ने लगते हैं । एक कहावत है --

'प्यादे ते फर्जी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय ।' धन आया और चाल चलन, आचरण बिगड़ गया। शराब, जुआ, दुराचार साथी बनने लगे ।

कई लोग अपनी उन्नति से पूर्व की स्थिति का सदा ध्यान रखते हैं । वे कभी कुपथगामी नहीं बनते। उन्हें धन भी मिलता है, सम्मान भी मिलता है, किन्तु वे धन-सम्मान को परमेश्वर का प्रसाद मानकर स्वीकार करते हैं । स्वयं सुखी रहते हैं और दूसरों को भी आश्रय देते हैं । उनका धन श्री (आश्रय) बन जाता है । एक सच्ची कथा कही जाती है । एक गरीब व्यक्ति भिक्षा करते-करते एक सेठ जी की गद्दी पर पहुंचा । सेठ जी मनुष्य के पारखी थे । उन्होंने उसका हाव-भाव देखा तो उससे पूछ लिया - क्या तुम नौकरी करोगे ? सेठ ने उसे नौकर रख लिया । सेठ रोज उसकी परीक्षा लेता और वह व्यक्ति नित्य खरा, सत्याचारी प्रमाणित होने लगा । सेठ ने उसे बाजार का काम सौंपा । सैकड़ों का हिसाब रहता लेकिन उसका सत्याचार कभी न डिगा। सेठ ने उसे रुपये ले आने, ले जाने का काम सौंपा । यहां भी वह ईमानदार निकला । सेठ के दूसरे नौकर उसकी उन्नति से जलने लगे । सेठ ने उसकी ईमानदारी देखकर गद्दी का मुनीम बना दिया और बगल ही एक कोठरी में रहने की व्यवस्था कर दी । वह ईमानदार तो था ही । सेठ लाखों का काम उस पर छोड़ देता । कभी एक पैसे की बेईमानी न मिली । दूसरे नौकर और भी जलने लगे । वे लोग उसकी शिकायत करने लगे । सेठ ने शिकायत की अनसुनी कर दी। यह नया मुनीम नित्य स्नान करके प्रथम अपनी कोठरी में जाता, वहां कुछ पूजा-पाठ करता फिर सेठ की गद्दी पर आता । लोगों ने सेठ के कान भरे । धीरे-धीरे सेठ का मन विचलित होने लगा। लोगों ने कहा - यह पहले अपनी कोठरी में जाकर दरवाजा बन्द कर अपना हिसाब करता हैं फिर आपकी गद्दी पर आता हैं । सेठ के मन में चोर आ गया था । एक दिन मुनीम ने जैसे ही दरवाजा बन्द किया सेठ ने दरवाजा खटखटाया। दूसरों ने भी ललकारा दरवाजा खोलकर जहां के तहां रहो । मुनीम ने दरवाजा खोलकर, दरवाजे के बीच में खड़े होकर हाथ जोड़कर सेठ से प्रार्थना की, 'आप हमारे स्वामी हैं, आप से कुछ छिपाना नहीं लेकिन औरों को मत आने दीजिए ।' सेठ को उसके ऊपर दया आ गई । सेठ ने सबको रोक दिया। दरवाजा फिर बन्द कर दिया। सेठ ने देखा मुनीम के पूजा करने का आंसन बिछा था । आसन के सामने एक फटी-पुरानी गठरी रखी थी और कोठरी में कुछ न था । न रुपया, न पैसा,

न बक्सा, न तिजोरी। सेठ ने हैरान होकर पूछा--क्या तुम इसी की पूजा करते हो ? मुनीम ने सेठ के पैर पकड़ लिए और बोला-'मालिक मेरे ये वो कपड़े हैं, जिन्हें पहन कर मैं आपसे भीख माँगने आया था। यह भिक्षा की झोली हैं। आपके हीरे-जवाहरात संभालने से पहले इनको देख लेता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं—मैं यह था, अब यह हूं। प्रभु मेरा ईमान ठीक रहें। मेरे सेठ की गद्दी अचल रहे।' सेठ की आंखों में आंसू थे। सेठ ने उसे छाती से लगा लिया और दूसरे नौकरों को डांटा कि यह मनुष्य नहीं देवता हैं। उसे और भी सब काम सौप दिया।

मनुष्य जब दक्षिणा पाता हैं तो उसके हृदय में सच्चाई के प्रति श्रद्धा होती हैं। उसे परमेश्वर और सत्य पर विश्वास होता हैं और उसे सत्य की प्राप्ति भी हो जाती है। यह मंत्र व्रत से सत्य तक की यात्रा का प्यारा वर्णन करता हैं।

--o--

(पृष्ठ ११ का शेषांश)

में पूछा। उन्होंने कहा — शिव को हम मानते हैं। परन्तु शिव नाम कल्याण का है। जिसको हम मानते हैं। दूसरा जो शिव पार्वती का पति है उसको हम नहीं मानते। वहाँ स्वामी जी लगभग एक मास रहे थे कि अचरौल के ठाकुर साहब ने जोशी रामरूप को उनके लाने के लिये भेजा। कारण यह था कि स्वामी जी ने एक पत्र उनको लिखा कि हमारा विचार अब आगे को जाने का है। तब सरदारों ने उसे भेजा कि तुम जाकर महाराज को ले आओ। इसलिए वह जाकर एक मास और उनके पास रहा। जोशी रामरूप कहता है कि मैंने जाकर ब्रह्मा के मन्दिर में देखा कि एक बालिश्त भर के लगभग पृथ्वी से ऊँचा ढेर टूटी हुई कंठियों का लगा हुआ था। जब मैंने पूछा कि यह क्या कारण है तो बोले कि भाई। तुम्हारे देश की अवस्था बिगड़ रही है उसको हम सुधारते और जो पहले अविद्या बढ़ी हुई है उसको निकालते हैं। जयपुर से शिवनारायण नामक एक ब्राह्मण, मोरोजः निवासी उनके साथ अष्टाध्यायी पढ़ने को गया था। वह भी वहाँ उस समय उपस्थित था, रसोई भी वही बनाता था और पढ़ता भी था। सब मिलाकर वहाँ पाँच मनुष्य थे। वहाँ उनके पास सैकड़ों पुरुष आते थे। एक दिन एक जोधपुर का वकील भी आया था। उसकी प्रार्थना पर स्वामी जी ने जोधपुर जाने का विचार किया फिर मुझसे पूछा कि कहो तुम्हारी क्या सम्मति है। अन्त में मेरी प्रार्थना पर उन्होंने जयपुर लौटना स्वीकार किया, इसलिए वहाँ से लौटकर अजमेर आये।

शिवदयाल, भूतपूर्व पुजारी ब्रह्मा जी, कहता है कि मैंने उनके कहने के अनुसार मारवाड़ में उनके उपदेश की व्यवस्था की अर्थात् नागौर के पास मोंडवा स्थान रियासत जोधपुर में जाकर अपने श्रीमाली ब्रांह्मण लक्ष्मीचन्द को जो उस ग्राम का शासक था कहा कि इस प्रकार महाराज दयानन्द जी पधारने को कहते हैं यदि आप सवारी भेजें। उसने सवारी भेजने का वचन दिया। फिर वह स्वामी जी को लेने के लिए पुष्कर में भी आया परन्तु स्वामी जी उस समय चले गये थे। (क्रमशः...)

वेद कहता है अन्तरिक्ष के ग्रहों पर एलियन रहते हैं...

–सुखदेव व्यास

परमात्मा ने यह सृष्टि प्राणियों के लिये सृजित की है। यह ब्रह्माण्ड पंच तत्वों से बना है। पंच तत्व पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश हैं । इसके अलावा कोई तत्व नहीं है। इन पंच तत्वों के अंश परमाणु रूप में पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त हैं। जब कहीं इन परमाणुओं का मेल होता है, धीरे-धीरे जब आपस में घर्षण होता है तो इन तत्वों का मेल मजबूत होता जाता है और वे तत्व पृथ्वी के समान दृढ़ होकर लोक-लोकान्तर के रूप में आकाश में भ्रमण करते रहते हैं, और इन लोक लोकान्तर में और ग्रह नक्षत्रों में ये ही पंच तत्व विद्यमान रहते हैं।

इस ब्रह्माण्ड में अनेक लोक लोकान्तर हैं जिनका पता करना दुष्कर कार्य है। अमेरिका और विश्व के अनेक वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड में पृथ्वी के समान वातावरण वाले लोकों की भी खोज की है, हो सकता है वहां पर मानव बस्तियाँ हों । जिस प्रकार पृथ्वी पर पंच तत्व विद्यमान है उसी प्रकार उन लोकों में भी पंच तत्व होना चाहिये और वहां पर भी प्राणियों का निवास हो।

हम वेद को समस्त विद्याओं का मूल मानते हैं। इसलिए वेद में भी लोक लोकान्तर में प्राणी बस्ती होने का उल्लेख होना चाहये। वेद में प्राणी के लिये क्या क्या आवश्यक है — यह मिलता है। इसी प्रकार ऋग्वेद के भाग-३ पृष्ठ १७० सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित मंत्र है :—

ये देवासो दिव्येकादश स्थपृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितोमहिनैकादश स्थ देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ।। (म०१/सूक्त १२९/म०११)

हे ।।देवासः।। विद्वानों तुम ये ।।जो।। ।।दिवि।। सूर्यादिलोक में ।।एकादश।। दस प्राण और ग्यारहवां जीव ।।स्था।। है वा जो ।।पृथिव्यास।। पृथिवी में ।।एकादश।। उक्त एकादश गण हैं । अधिस्थ।। अधिष्ठित हैं वा जो ।.महिन्य।। महत्व के साथ ।। अप्सुक्षितः। अन्तरिक्ष व जलों में निवास करने हारे ।।एकादशः।। दशेन्द्रिय और मन ।स्थ।। है ।।ते।। वे जैसे हैं उनको जानो के हे।।देवाशः।। विद्वानों। तुम ।.इमस।। इस ।।यज्ञसत्संग करने योग्य व्यवहार रूप यज्ञ को ।।जुषध्वस।। प्रीतिपूर्वक सेवन करो।

परमात्मा का प्रत्येक कार्य बुद्धिपूर्ण है। ईश्वर ने सृष्टि में जो पदार्थ सूर्यादि लोकों में अर्थात जो अन्यत्र वर्तमान है वे ही यहां हमारी पृथ्वी पर हैं। जितने यहां हैं उतने ही वहां और लोकों में है। अगर हम उनको यथावत् जान लेते हैं तो उसे हमारी सुख समृद्धि, योगक्षेम की निरंतर वृद्धि होगी। इसीलिये हमारे वैज्ञानिक अन्तरिक्ष में निरंतर खोज कर रहे हैं।

वेद कहता है जब सूर्यादिलोक में जब दस प्राण और ग्यारहवां जीव है तो फिर जीव जो शरीर के आधार पर जिस लोक में रहता है उसका आनंद भोगता है। वेद कहता है दस इंद्रियाँ और ग्यारहवां मन भी वहां है तो इन लोकों में किस प्रकार के शरीर होंगे। जिस लोक का जैसा वातावरण होगा वैसे ही वहाँ शरीर हो सकते हैं। जिस प्रकार सूर्यादि लोक में दस प्राण अर्थात प्राण, अपान, समान, उदान व्यान नाग, कुर्म, कृकर, देवदत्त, धनंजय रहते हैं और यह दस प्राण शरीर में ही रहते हैं। ताकि शरीर का संचालन हो सके । जब शरीर है तो जीव तो रहेगा ही। इससे ऐसा लगता है कि ब्रह्माण्ड में जितने

भी ग्रह, नक्षत्र, आकाश गंगा दिख रही है और ग्रहों के आस-पास जो उपग्रह घूम रहे हैं उन सब पर प्राणी, वनस्पतियाँ, औषधि, होना ही चाहिये। क्योंकि जब जीव रहता है, उसको शरीर की आवश्यकता रहती है और शरीर को चलाने के लिये उसके साधन भी आवश्यक है।

आज वैज्ञानिकों ने ब्रह्माण्ड में ऐसे ऐसे लोकों का पता लगाया है जिनका वातावरण पृथ्वी के समान है। हो सकता है वहां पर पृथ्वी जैसी ही मानव सभ्यता विकसित हो सकती है। यह भी हमें ध्यान रखना होगा कि प्रत्येक वस्तु की सीमा होती है। उसी प्रकार लोक लोकान्तरों की सीमा और वातावरण भी अलग अलग हो सकता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर रहने वाले जीव जिनकी भी सीमा बनी है अगर पानी में से मछली को निकाल लिया जाय तो वह मर जाती है और जमीन पर रहने वाले पानी में नहीं रह सकते। अगर उनको अन्दर जाना हो तो साधन लेकर ही जाना पड़ता है। आकाश में कई कीट रहते हैं जो धरती पर मर जाते हैं । जैसे मछली जल में रहते हुए भी प्राणवायु ग्रहण करती है। लेकिन पानी से बाहर मर जाती है। जलचरों का जीवन जल है, वायुचरों का जीवन वायु है। इसीलिये परमात्मा ने अन्तरिक्ष में मनुष्य की सीमा को बांध रखा है। अगर उसे वायुमण्डल से बाहर कर दिया जाय तो वह जी नहीं सकता। उसी प्रकार अन्य लोकों में रहने वालों की भी सीमा अवश्य ही होगी। अगर वे उस वातावरण से बाहर आते हैं तो जी नहीं सकेंगे। जिस प्रकार पृथ्वी पर मानव ने वैज्ञानिक उन्नति कर जो लोकांतर में है उसका पता वह पृथ्वी पर लगा रहा है, अपने रोबोट भेजकर रिमोट से कन्ट्रोल कर लेता है वैसे ही अन्य लोकों के मानव भी इस विद्या को जानते ही होंगे। जभी तो वे खोज-खबर लेने यहां तक आ जाते हैं।

सारी सृष्टि का आधार सत्व, रज, और तम का ही परिणाम है। जिस प्रकार हम पृथ्वीलोक में रहते हैं—उसी प्रकार अन्य लोकों में भी प्राणी जगत रहता ही होगा। परमात्मा ने ब्रह्माण्ड का सृजन आत्मा की उन्नति के लिये किया है। अपने अपने कर्मों के अनुसार परिणाम भोगने पड़ते हैं। हां यह हो सकता है अलग अलग स्थानों पर प्रकृति की साम्यता और विकृति अलग-अलग परिमाण से हो। कहीं वायु के आधिक्य से, कहीं अग्नि के आधिक्य से, कहीं जल के आधिक्य से प्रकृति में स्वीकृति उत्पन्न होने पर उसी प्रकार की सृष्टि हुई होगी।

यही कारण है कि अंतरिक्ष मानव 'एलियन' उसी वातावरण से निकल कर अपने साधन अपना कर हमारी पृथ्वी की ओर आते हों। जिस प्रकार हमारे वैज्ञानिक पृथ्वी के वायु मण्डल से निकल कर चांद पर वहां के वातावरण के अनुसार साधन ले जाकर जीवित पहुंचे थे। हमारे वैज्ञानिक अब पृथ्वी की वनस्पति वहां ले जाकर पृथ्वी जैसा वातावरण बनाना चाहते हैं ताकि वह स्थान रहने योग्य हो सके। भारतीय खगोलवैज्ञानिकों ने चांद पर पानी की खोज की है। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने वृहस्पति और शनि ग्रह पर पानी होने की संभावना व्यक्त कर बताया है कि इन ग्रहों में भी पानी है। मंगल पर पानी की सूखी परतें दिखी हैं । इससे भी यही सिद्ध हो रहा है कि अन्य ग्रह नक्षत्रों में पानी है। वैसे भी वैदिक ऋषि मुनियों ने यह बता ही दिया है कि—प्रकृतियां आठ है और उसके विकार सोलह विकार बताये हैं। अव्यक्त, महत्त्व, अहंकार, पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और तेज. इन आठ तत्वों को पृथ्वी बताया है। विकारों में—आंख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा, वाक, हाथ, पैर, गुदा, लिंग, शब्द, स्पर्श, रूप, रस

और गंध- इनमें हस्त-पादादि कर्मेन्द्रियाँ और शब्द, स्पर्शादि विषय विशेष कहलाते हैं तथा नेत्रादि ज्ञानेन्द्रियों को सविशेष कहते हैं। ये सब मिल कर पन्द्रह हैं और १६वां मन हैं। ये ही सोलह विकार कहलाते हैं। इस प्रकार प्रकृति और उसके विकार ब्रह्माण्ड के हर ग्रह नक्षत्र में होने के कारण हर स्थान पर जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उदिभज-इन चार प्रकार के प्राणी हर लोक में मिलना ही चाहिये। इस प्रकार ब्रह्माण्ड के प्राणियों के साथ साथ सब में बुद्धिमान मनुष्य भी अवश्य ही होगा। रंग-रूप अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन प्राणीजगत लोक-लोकान्तर में है। एक दिन हमारा इन एलियनों से सम्पर्क अवश्य ही होगा और हमारे और उनके ज्ञान से प्रीतिपूर्वक व्यवहार कर सभी का मंगल करेंगे। यही वेद कह रहा है और यह सत्य है कि ग्रह-नक्षत्रों में एलियन है लेकिन वहाँ तक पहुंचने के लिये मन की गति के समान साधन चाहिये।

अनंत सुन्दरम् भवन
मो० ९०३९१८२४८९ १८, जहाजगली उज्जैन(म.प्र.)

—०—

गौ अर्थात गाय

–सुखदेव व्यास

गौ परोपकारी है,
उस सा न कोई परोपकारी,
करती मनोरथ पूर्ण सबके,
वध न करो उसका–
वह जगपालनहारी ।
वह दान करती अपने जीवन का
वह दान करती अपनी संतानों का
वह अपने लिये नहीं जीती
वह औरों के लिये जीती है ।
गौ सत्यरूपा है ।
गौ साक्षात् धर्म है ।
गौ परम श्रद्धा है ।
गौ परम आराधना है ।
गौ साक्षात लक्ष्मी है
इसके समान न कोई दानी,
इस संसार में
इसकी रक्षा करो - इसका वध न करो
ऐ संसार वालों–

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन वृत्त

अध्याय–१

पुष्कर के मेले का वृत्तान्त

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुन कृष्ण पक्ष दशमी को गुजरात में संवत १८८१ में हुआ था । पूरे भारतवर्ष में स्वामी जी का जन्म दिवस मनाया जाता है इसी अवसर पर आर्य समाज कलकत्ता ने निर्णय किया कि पं० लेखराम द्वारा संकलित एवं आर्य महामहोपदेशक कविराज श्री रघुनन्दन सिंह निर्मल द्वारा अनूदित महर्षि स्वामी दयानन्द का जीवन चरित्र धारावाहिक प्रकाशित किया जाय, इसी शृंखला में प्रस्तुत है यह धारावाहिक जीवन-चरित्र — सम्पादक

(गतांक से आगे)

पाखण्ड छोड़कर सच्चिदानन्द नाम जपो, पुजारी ने पूजा छोड़कर डाकखाने में नौकरी करली –

शिवदयाल ब्राह्मण पराशरी पुरोहित पुष्कर भूतपूर्व पुजारी मन्दिर श्री ब्रह्मा जी ने कहा कि जब स्वामी जी पुष्कर पधारे मैं उन दिनों ब्रह्मा जी के मन्दिर में पूजा करता था । जब मैं पूजा करता तो स्वामी जी कहते थे अरे शिवदयाल ! तेरा ब्रह्मा मुंह से बोलता है या तुम्हारे से बात करता है ? और जब मैं ढोल बजाता तब कहते कि अरे चमड़ा कूटने से क्या लाभ है और झांझ बजाने से भी हमको रोका करते थे । मैंने कहा कि महाराज यहां तो कम है परन्तु मारवाड़ में पाखंड बहुत फैल रहा है—वहां आप सुधारो। उन्होंने कहा कि यदि कोई वहां का कामदार हमारे लिए सवारी भेजे तो हम अवश्य जावें । मैंने पूछा कि स्वयं ईश्वर का जो नाम है वह मुझे बता दीजिए क्योंकि बड़े ब्रह्मा को ही विष्णु आदि कहते हैं । तब स्वामी जी ने कहा कि सच्चिदानन्द यही नाम जाप किया करो और नहीं । उनको हम दोनों समय रोटी और फिर रात के समय दूग्ध पिलाते थे । उनसे हमारी बहुत बातें हुई परन्तु वह सारी स्मरण नहीं किन्तु एक बात उनकी विशेष रूप से याद है जो कभी नहीं भूल सकती कि यहाँ के बहुत से लोगों से स्वामी जी ने कंठिया उतरवा कर ब्रह्मा के मन्दिर के एक कोने में ढेर करवा दिया था । मेरी कंठी भी तुड़वा दी थी । रामानुज के तिलक का खंडन करते थे । उस समय शिव या विष्णु की पूजा नहीं, प्रस्तुत केवल परमेश्वर की उपासना बतलाया करते थे । एक जयदेवगिरि जी महात्मा साधु थे वह भी स्वामी जी की बहुत प्रशंसा करते थे परन्तु वह अब मर गये हैं । उनकी विद्या, बल और उपकार की महिमा सर्वत्र हो रही थी । पहले मैं पंडों के रूप में घाट पर मांगा भी करता था, उनके उपदेश से ब्रह्मा जी की पूजा और घाट का मांगना छोड़ दिया । अब डाकखाने की नौकरी करता हूँ, हरामखोरी से काम नहीं । हमको तो महाराज सुधार गये, उनकी हम पर बड़ी कृपा हुई ।

रोजी-रोटी के कारण लोग असत्य से चिपटे रहे – एक विद्वान् पंडित गंगाराम जी ब्राह्मण, (जिनकी आयु ६८ वर्ष है) पुष्कर निवासी कहने लगे कि स्वामी जी मुझे कहते थे कि आप ऊर्ध्वपुण्ड मत लगाया करो, सीधा लगाओ और कंठी मत पहनो । हमने कहा कि एक लाख रुपया आप लाये होते तो सब ब्राह्मण स्वीकार कर लेते और कहते कि जय महाराज दयानन्द जी महाराज की जय । स्वामी जी जैसा महात्मा, विद्वान्, जितेन्द्रिय, बलवान् इस भारतवर्ष में दुर्लभ हैं । उन दिनों चन्द्रघाट पर एक द्राविड़ी संन्यासी अठारह पुराणों की ब्राह्मणों से प्रथम कथा कराता और समाप्ति पर ब्रह्मभोज कराया करता । स्वामी जी मुझको साथ लेकर गऊघाट पर उससे शास्त्रार्थ करने गये । उसको बुलाया परन्तु वह न आया । उस समय मेरे साथ सौ दो-सौ के लगभग और मनुष्य भी थे । जब वह द्राविड़ी संन्यासी न आये तो स्वामी जी ने कहा कि वह हार गये । उनके कहते ही हम सब ने कहा कि वह हार गये क्योंकि हम गऊघाट पर जाजम बिछा कर बैठे थे कि वह शास्त्रार्थ के लिए आवें परन्तु वह न आये ।

''भोग लगाकर हमको पिला दिया'' – एक दिन ब्रह्मा जी के मन्दिर के बड़े पुजारी गुसांई मानपुरी संन्यासी ने ब्रह्मा को भोग लगाकर दूध स्वामी जी को पिला दिया । इस बात की जब स्वामी जी को सूचना मिली कि यह मूर्ति को भोग लगाकर हमको पीछे पिलाता है तो कुपित हुए और महन्त को कहा कि अरे ! पत्थर को भोग लगाकर हमको पिला दिया । महन्त ने कहा कि देखो खेद है कि उन्होंने मेरे इष्टदेव ब्रह्मा की मूर्ति को पत्थर बतलाया, आगे उनको मैं दूध न पिलाऊँगा । इसी क्रोध में फिर उसने स्वामी जी को दूध न पिलाया और पूछने पर कहा कि मैं ब्रह्मा जी का अन्न खाता हूँ ।

स्वामी जी अद्वितीय जितेन्द्रिय तथा विद्वान् थे — एक दिन स्वामी जी ने मुझे पूछा कि आप भागवत को क्यों बांचते हैं क्योंकि यह व्यास जी की बनायी हुई नहीं है प्रत्युत बोपदेव की है । मैंने न माना और उल्टा क्रुद्ध होकर चार दिन स्वामी जी को न मिला और न नमो नारायण किया । तब स्वामी जी मेरे पास आये और खड़े होकर मेरा हाथ पकड़ लिया । मैंने कहा कि महाराज । जोर करो । महाराज ने कहा कि घर की लुगाइयाँ माताएँ कहेंगी कि इसकी उंगलियाँ तोड़ दीं । मैंने कहा कि नहीं टूटती हैं। तब स्वामी जी ने हरगोविन्द अपने रसोइये से कहा कि तू इससे हाथ डाल । उसने पंजा डाला, उसके कहने से मैने खींचा तब उसका पंजा जख्मी हो गया और वह रोटी पकाने से रह गया । स्वामी जी मुझ पर दया करते थे अन्यथा वह बहुत बलवान् थे और जितेन्द्रियता और विद्या में उनके समान दूसरा नहीं था ।

देश की दशा सुधारने का ही हर समय ध्यान – एक दिन रंगाचार्य के शिष्य गोविन्ददास का और स्वामी जी का गीता के एक श्लोक पर शास्त्रार्थ हुआ । स्वामी जी ने उसे बहुत समझाया परन्तु वह मूर्ख न समझा । वह शास्त्रार्थ आदि कार्यों में इतने दृढ़ थे कि यदि कोई तीन-तीन दिन तक शास्त्रार्थ करता रहे तो भी न घबरायें और वह बड़े प्रतापी थे । इसी बार जब हमने उनसे पूछा कि आप किसको मानते हैं तो कहा कि हम केवल सच्चिदानन्द परमेश्वर को मानते हैं । हमने एक बार शिव जी के विषय

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सत्यार्थ प्रकाश काव्य सुधा

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश का काव्यानुवाद

– पं० देवनारायण तिवारी 'निर्भीक'

मो0 : 9830420496

(३)

श्री पं० देवनारायण तिवारी – आर्य समाज के उपदेशक और विद्वान् कवि हैं, इनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिसमें ३ महाकाव्य हैं । पं० जी ने सत्यार्थ प्रकाश का छन्दबद्ध भावानुवाद किया है । आर्य समाज कलकत्ता ने इसे आर्य संसार मासिक पत्र में धारावाहिक रूप से प्रकाशित करने का निश्चय किया है ।

यह तृतीय कड़ी आपके समक्ष है । – सम्पादक

प्रथम समुल्लास (गत मई अङ्क से आगे)

जैसे – **(ओं खं....) अवतीव्योम, आकाशमिव**
व्यापकत्वात् खम्, सर्वेम्योबृहत्वाद् ब्रह्म ।।१।।

सबसे बड़ा है 'ओ३म्' ईश्वर, इसलिए वह ब्रह्म है ।
है सर्व सुख दाता सदा वह, अमृत है, शुचि सोम है ।।
वह ही उपास्य पुनीत प्यारा नष्ट वह होता नहीं ।
बैठों जहाँ भी प्रेम से, वह ओ३म् मिल जाता वहीं ।।१८।।
(ओ३मित्येतद्...) ।।२।।

अतएव उसकी ही करें आराधना नित ध्यान से ।
जोड़ें उसी से डोर अपनी, अन्य को तज ज्ञान से ।।
सब वेद – शास्त्रों में उसे ही मुख्य है माना गया ।
निज नाम उसका 'ओ३म्' है, यह ही सदा जाना गया ।।१९।।
(सर्वे वेदा०....) ।।४।।

जिस परम पद का वेद गाते एक स्वर से गान हैं ।
सारे तपस्वी ब्रह्मचारीगण करें मुद ध्यान् हैं ।।
धर्मज्ञजन जिसको सदा स्वीकारते हैं प्रेम से।

सब मानकर जिस ब्रह्म को इच्छा करें नित नेम से।।२०।।
जिस नाम को जप धार्मिक करते शुभानुष्ठान हैं ।
है नाम उसका 'ओ३म्' जो ईश्वर 'विराट' महान् है ।।
(प्रशासितरं...) ।।५।।६।।

जो ज्ञानदाता विश्व का जिसका न कोई अन्त है ।
जो सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, स्वयं प्रकाश रूप अनन्त है ।।२१।।

वह ही समाधि-विवेक से बस जानने के योग्य है ।
वह परम पुरुष महान् सबके मानने के योग्य है ।।
अरु स्वप्रकाश स्वरुप है, इस हेतु 'अग्नि' कहा उसे ।
विज्ञानमय भी है स्वयं, अतएव 'मनु' मानें उसे ।।२२।।

सब विश्व का पालन करे इससे 'प्रजापति' रूप है ।
ऐश्वैर्यवान परम प्रभो इस हेतु इन्द्र स्वरूप है ।
वह ब्रह्म जीवन मूल है अतएव 'प्राण' महान् है ।
सबमे निरन्तर व्याप्त है इस हेतु 'ब्रह्म' सु-नाम है ।।२३।।
(स ब्रह्मा सं० विष्णु०....)।।२।।

निर्माण करता विश्व का इससे कहें 'ब्रह्मा' उसे ।
सर्वत्र व्यापक एक सा इस हेतु 'विष्णु' कहें उसे ।।
दण्डित करे बहु खल जनों को इसलिए वह 'रुद्र' है ।
रोदन कराता है भले, पर वह उदार - समुद्र है ।।२४।।

कल्याणकर्ता स्वयं होने से प्रभो 'शिव' रूप है ।
उस सा दयालु न और कोई वह विचित्र अनूप है ।।२५।।

यः सर्वमश्नुते न क्षरति न विनश्यति तदक्षरम्।
यः स्वयं राजते स स्वराट्, यो अग्निरिव कालः
कालयिता प्रलयकर्ता स कालाग्निरीश्वर !
वह सर्वव्यापक और अविनाशी, अनीश महान् है ।
इस हेतु 'अक्षर' नाम उसका सर्वप्रिय सुखधाम है ।।
जगदीश अपनी ही प्रभा से स्वयं आभावान् है ।
इससे 'स्वराट्' पुकारते उस ब्रह्म को विद्वान् हैं ।।२६।।

है काल का भी काल, अति विकराल ज्वाल स्वरूप है ।
कालाग्नि कहते इसलिए उसको, कि सबका भूप है ॥

(इन्द्रं मित्रं) ।।८।।

जो एक ही है अद्वितीय कहीं न उसका जोड़ है ।
वह सत्य है उस ब्रह्म सा कोई न जगमें और है ॥२७॥

इन्द्रादि उसके नाम हैं, हैं कर्म भी उसके बड़े ।
सब शक्तियों का शक्ति वह है, सकल गुण उसके बड़े ॥
वह प्रकृति आदि सभी पदार्थों में निरन्तर व्याप्त है ।
वह 'दिव्य' शक्ति विराट् है, उत्तम सभी से आप्त है ॥२८॥

सब कर्म उसके पूर्ण हैं वह सृष्टि का पालक महा ।
इससे 'सुपर्ण' उसे कहें (वह ही विरज जाता कहा ॥)
वह 'गरुत्मान' (महेश) है, उसका स्वरूप महान् है ।
वह 'मातरिश्वा' मरुतवत् अत्यन्त ही बलबान है ॥२९॥

अतएव दिव्य, सुपर्ण आदि उसी प्रभु के नाम हैं ।
वह ब्रह्म सर्वोपरि सदा उसके अलौकिक काम हैं ।
इस भांति ईश अनन्त है बेअन्त उसका जोर भी ॥
सारी कलाएं भी असीमित देखता सब ओर भी ॥३०॥

(भूमिरसि०...) ।।९।। भवन्ति भूतानि यस्यां सा भूमिः।

जिसमें सदा उत्पन्न होते भूत (प्राणी) सब सदा ।
है 'भूमि' इससे नाम उसका ईश है जो सर्वदा ॥
उत्पन्नकर्ता विश्व का है और है आधार भी ।
पाता उसीसे प्राण जग, है विश्व-प्राणाधार भी ॥३१॥

(इन्द्रो महना०....) ।।१०।।

है इन्द्र प्रभु का नाम ही, इसके प्रमाण अनेक हैं ।
गुण नाम उसके भी बहुत, पर ब्रह्म केवल एक है ॥

(प्राणाय०) ।।१०।।

ज्यों इन्द्रियाँ और गात्र सारा प्राण के वश में रहे ।
तैसे जगत् परमात्मा के सब समय वश में रहे ॥३१॥

(शेष पृष्ठ २७ पर)

।।ओ३म्।।

''पं० रामनरेशजी मिश्र शास्त्री''

पं० रामनरेशजी उत्तर प्रदेश में सुल्तानपुर जिले में काछा भिटौरा नामक स्थान के काछा ग्राम के हैं । आपका जन्म बैशाख कृष्ण पंचमी सम्वत् १९७९ विक्रमी को यहीं ग्राम काछा में सरयूपारीण ब्राह्मणों के मिश्र परिवार में हुआ था । आर्यसमाज के क्षेत्र में इनको पं० रामनरेशजी शास्त्री के नाम से जाना जाता है । पं० रामनरेशजी की संस्कृत शिक्षा व्याकरण-शास्त्री तक वहीं उत्तरप्रदेश में हुई थी । शास्त्रीजी बड़े बुद्धिमान, शीलवान, सरल एवं मेधावी विद्यार्थी थे । आर्यसमाज कलकत्ता के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य पं० रमाकान्तजी शास्त्री भी उसी अंचल के थे । इस प्रकार आचार्यजी के मन में यह बात बैठ गई कि यदि पं० रामनरेशजी को आर्यसमाज के सिद्धान्तों में दीक्षित किया जा सके तो आर्यसमाज को एक सुन्दर विद्या-विनय-सम्पन्न ब्राह्मण उपदेशक मिल जायेगा, अतः उन्होंने पं० रामनरेशजी से सम्पर्क किया और इन्हें सन् १९४४-४५ ई० में कलकत्ता बुला लिया । कलकत्ता आकर दो ही चार दिनों में पं० रामनरेशजी वैदिक सिद्धान्तों से सहमत हो गये और स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के स्वाध्याय में लग गये । पं० रामनरेशजी व्याकरण शास्त्री तो बनारस से ही उत्तीर्ण थे, कलकत्ता आकर इन्होंने काव्यतीर्थ एवं साहित्यरत्न आदि परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं ।

आर्यसमाज बड़ाबाजार के भूतपूर्व प्रधान श्री रामदेवजी सिंहानियाँ पं० रामनरेशजी शास्त्री से ऋषि-ग्रन्थों का नियमित अध्ययन करने लगे । इस प्रकार शास्त्रीजी को स्वामी दयानन्दजी के ग्रन्थों के अध्ययन अध्यापन का सुयोग मिलने लगा । पं० रामनरेशजी आर्यसमाज बड़ाबाजार और आर्यसमाज कलकत्ता दोनों के सम्पर्क में वेद पारायण यज्ञ और वैदिक धर्म-प्रचार के कार्यों में तत्पर रहने लगे ।

आजीविका की दृष्टि से शास्त्रीजी कलकत्ता के सुप्रसिद्ध श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय में संस्कृत के वरिष्ठ अध्यापक रहे । श्री शास्त्रीजी अपनी जन्मभूमि के मान्य ब्राह्मण विद्वान् थे और अपनी वैदिक निष्ठा और आर्यसमाजी कट्टरता के लिए प्रसिद्ध थे । इनके अञ्चल के किसी रियासत के राजा ने इन्हें पर्याप्त भूमि और धन का लोभ देकर इनसे मृतक श्राद्ध कराने के लिये आग्रह किया । शास्त्रीजी अपने विचारों के दृढ़ थे और उस समय लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ जब राजा की भूमि का दान इन्हें इनके सिद्धान्तों से विचलित न कर सका । इन्होंने यह मृतक श्राद्ध कराने का प्रस्ताव ठुकरा दिया ।

शास्त्रीजी संस्कृत के गम्भीर विद्वान् थे, रहन-सहन से अति सरल और वृत्ति से परम सात्विक ब्राह्मण थे । शास्त्रीजी की निष्ठा स्वामी दयानन्दजी के ग्रन्थों पर और वैदिक सिद्धान्तों में अटूट रही है । इनके व्याख्यानों में एक अध्यापक का कौशल, अपने विषय को सुस्पष्ट, किन्तु सीधे सरल ढंग से उपस्थित कर देना इनकी विशेषता थी । आर्यसमाज कलकत्ता के साप्ताहिक सत्संग में आप नियमित रूप से सफलतापूर्वक 'सत्यार्थ प्रकाश' की कथा सुन्दर ढंग से किया करते थे । जीवन की सान्ध्य बेला में उन्हें रीढ़ की हड्डी में कैंसर का पता चला । उनके भतीजे डॉ० देवेश मिश्रा (बलरामपुर हॉस्पिटल, लखनऊ) ने उन्हें अपने पास बुलवा लिया । अन्ततः २० अक्टूबर २००४ को इस निस्पृह सरल जीवन का अवसान हो गया ।

।।ओ३म्।।

''व्यास और युधिष्ठिर का प्रारब्ध के विषय में शिक्षाप्रद संवाद''

– श्री खुशहाल चन्द्र आर्य

यह लेख मैने ''महाभारत के प्रेरक प्रसंग'' नामक पुस्तक जिसको पूज्य आचार्य स्वदेश जी ने लिखी है, उससे उद्धृत किया है, जो इस भाँति हैं :—

महाभारत के युद्ध के बाद व्यापक जनहानि को देखकर महाराज युधिष्ठिर का मन व्याकुल हो गया और वे इस सारे कृत्य का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर अपने को धिक्कारने लगे । अपने अन्दर छिपी लालच की भावना ही उन्हें सारे अनर्थ का कारण दिखाई देने लगी । उनके मन में संसार के सुख भोगों के प्रति घोर घृणा पैदा हो गई और वे जंगल में जाकर अपने प्राण तक त्यागने को उद्यत हो गये । ऐसी अवस्था में महर्षि व्यास ने आकर धर्मात्मा युधिष्ठिर को अपने अनुभूति परक उपदेश देकर संसार के घटना चक्र में प्रारब्ध की महत्ता को भी निरूपित किया और समझाया कि संसार में जो घटना चक्र चलता है, उसमें केवल वर्त्तमान काल की घटना चक्र को नहीं चला रहा है, भूतकाल का घटनाक्रम भी प्रारब्ध बनकर अपना प्रभाव डालता है । जब पुरूषार्थ करने पर भी कार्य में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं होती है, तब वहाँ पर प्रारब्ध को ही बलवान मानकर शोक नहीं करना चाहिए । व्यास जी ने इस बात को बड़ी ही उत्तमता से निरूपित किया है । वही विवरण आगे दिया है :—

युधिष्ठिर बोला हे मनुनिवर ! मुझे शोक नहीं छोड़ रहा । मैं कुल घातक, राज्य का लोभी और बन्धु-बान्धवों का हत्यारा हूँ । जिनकी गोद में खेल कूद कर पला और बड़ा हुआ, उन गंगापुत्र भीष्म को मैंने राज्य के लोभ से युद्ध में मरवा डाला । पूज्य आचार्य द्रोण जो धनुर्धारियों और राजाओं में भी आदरणीय है । युद्ध में उनके पुत्र के विषय में असत्य बोलकर मरवाया । सिंह के समान तेजस्वी बालक अभिमन्यु को लोभ वश द्रोणाचार्य से रक्षित सेना में झोंक कर मरवा डाला । मैं ऐसा पापी सब का नाश करने वाला, अब यही बैठकर अपने शरीर को सुखाकर त्याग डालूंगा । मुझ गुरु के हत्यारे को अनशन पर बैठा हुआ जाने जिससे अगले जन्म में कुल घातक न बनूँ । हे मुने ! न मैं अन्न खाऊँगा और न ही पानी को पीऊँगा, यही बैठकर अपने प्राणों का त्याग करूंगा ।

आपलोग प्रसन्नता सहित हमारे पास से जहाँ चाहें चले जायें और सभी लोग मुझे आज्ञा दें कि मैं अपने अनशन के द्वारा प्राण त्याग करूँ । हे जनमेजय ! अपने बन्धुओं के शोक से व्याकुल युधिष्ठिर को इस प्रकार की बातें करते देख, व्यास मुनि ने उन्हें रोककर कहा कि ऐसा मत करो । वे बोले, तुम शोक को करना बन्द करो महाराज । मैं पुनः कह रहा हूँ कि यह सब भाग्य का ही खेल हैं । जैसे जल में बुलबुले उठते और विलीन हो जाते हैं, इसी प्रकार संसार में प्राणियों में आपस में संयोग और वियोग का क्रम निरन्तर लगा रहता है । जितने संचय हैं उनका विनाश अवश्य होता है । संयोग हुआ है तो वियोग भी अवश्य होगा । बुढ़ापा और मृत्यु दोनो भेड़िये की तरह हैं जो प्रबल और निर्बल, छोटे और बड़े सभी प्रकार के प्राणियों को अपना ग्रास बना लेते हैं ।

कोई भी मनुष्य चाहे सारी पृथिवी पर ही शासन क्यों न कर रहा हो, बुढ़ापे और मौत से बच नहीं

सकता है । सुख और दुःख प्राणियों को विवश होकर सहना ही पड़ता है । उसके हटाने का कोई भी उपाय नहीं देखने में आता है । अप्रिय वस्तुओं के साथ संयोग और अति प्रिय वस्तुओं से वियोग, अर्थ-अनर्थ, सुख तथा दुःख, यह सब भाग्य से ही प्राप्त होते हैं । सभी प्राणियों के लिए बैठना, सोना, चलना, फिरना और खाना-पीना से सभी कार्य निश्चित समय के अनुसार ही होते हैं । कभी-कभी वैद्य भी रोगी देखे जाते हैं । बलवान भी निर्बल हो जाते हैं और धनवान भी धनहीन हो जाते हैं । काल की गति बड़ी विचित्र है । अच्छे कुल में जन्म, बल, पराक्रम, आरोग्य, रूप, सम्पत्ति और भोग का सामान, ये सब भाग्य से ही प्राप्त होते हैं ।

सम्पन्न लोगों के सन्तान ही नहीं होती है और जो लोग धन से हीन है उनके अनेकों सन्तान हो जाती हैं । जिनके पास पेट भरने को अन्न नहीं है, वे लम्बी आयु वाले देखे जाते है, दूसरी ओर अत्यन्त धनवान लोगों के कुल कीड़े मकोड़ों की तरह शीघ्र समाप्त हो जाते हैं । संसार में प्रायः धनवानों में खाने और पचाने की शक्ति नहीं होती है, जो गरीब हैं, वे मोटे अनाजों को भी आराम से पचा जाते हैं । विद्वान् लोगों ने शिकार, जुआ और व्यभिचार की बड़ी निन्दा की है, पर देखने में आता है, विद्वान् ही इन दुर्गुणों में अधिक फँसे पाते हैं । इस प्रकार देखने में आता है, समय के प्रभाव से प्राणी दृष्ट और अनिष्ट को प्राप्त करते रहते हैं । प्रत्यक्ष रूप से इन दोनों की प्राप्ति का कारण दिखाई नहीं देता है । सर्दी, गर्मी, वर्षा भी काल के प्रभाव से ही आते-जाते हैं । इसी प्रकार से प्राणियों को सुख और दुःख इसी काल के प्रभाव से प्राप्त होते हैं । बुढ़ापे और मृत्यु से मनुष्य को औषध, मन्त्र, हवन और सब कुछ भी बचा नहीं पाते । जैसे सागर में पड़े हुए काठ आपस से मिलकर फिर दूर चले जाते हैं, इसी प्रकार जीवों का मिलना और बिछुड़ना है ।

हमने संसार में अनेकों बार जन्म लिया और अनेकों माता-पिता मिले, अनेकों सन्तानें हमें प्राप्त हुई, स्त्रियाँ मिली परन्तु न तो वे हमारे हुए और न हम उनके हो पाये । हम प्राणी का न कोई सम्बन्धी है और न यह किसी का सम्बन्धी है । जैसे मार्ग से पथिक आपस में मिलते हैं इसी प्रकार सम्बन्धियों से मिलन अल्पकाल का है । विवेकी को इस विषय में सोचना चाहिए, मैं कहाँ हूँ, कहाँ जाऊँगा, कौन हूँ, यहाँ किसलिए आया हूँ और किसी का शोक क्यों करूँ ? आलस्य, सुखकारक लगता है परन्तु उसका अन्त दुःख है । कार्य करना दुःखदायी प्रतीत होता है । उसका फल दुःख है । सारे ऐश्वर्य पुरुषार्थी को मिलते हैं, आलसी को नहीं । न तो मित्र सुख दे सकता है और न तो शत्रु दुःख दे सकता है । इसी प्रकार प्रजा न धन दे सकती है और न धन सुख दे सकता है । हे पार्थ ! विधाता ने जैसे कर्मो के लिए तुम्हारी सृष्टि की है, तुम उन्हीं कर्मो को करो, तभी तुम्हें शान्ति मिलेगी । तुम कर्मफल के स्वामी या नियन्ता नहीं हो ।

पूज्य आचार्य स्वदेश जी ने इस संवाद को पहले पद्य में लिखा है, फिर गद्य में इसका अनुवाद यानी भावार्थ लिखा है । पर मैंने लेख लम्बा न हो, इस भय से केवल गद्य को ही यहाँ लिखा है, जो पाठकों के लिए बड़ा उपयोगी है । कृपया पाठकगण इसको खूब ध्यान पूर्वक पढ़कर इसका पूरा लाभ उठावें ।

फोन :- २२१८३८२५ (०३३)
मो० :- ८२३२०२५५९०
९८३०१३५७९४

C/o गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गाँधी रोड़
(दो तल्ला) कोलकाता-७०००००७

शिक्षित माता सदा प्रसन्नता देने वाली होती है

–डा० अशोक आय

वेद में विदुषी स्त्री को राका कहा गया है। इसका भाव यह है कि जो स्त्री नित्य स्वाध्याय करते हुए इसके गूढ़ रहस्यों को जान गई हो, जो स्त्री वेद की पूर्ण अधिकारी बन गई हो. वह स्त्री राका कहलाने की सच्चे में अधिकारी बन जाती है। यदि राका शब्द का अर्थ करें तो हम इसका अर्थ पूर्णमासी तथा दानशील के रूप में करते हैं । जिस प्रकार पूर्णमासी को सब आनन्दित होते हैं, उस प्रकार ही स्त्री भी तदनुरूप सब परिजनों को आनंदित करने वाली होना आवश्यक है। पूर्णमासी तथा दानशील से यह ही तात्पर्य लिया जाता है। इसलिए ही कहा गया है कि स्त्री सदा प्रसन्न रहने वाली हो तथा अपने समग्र परिवार को भी प्रसन्न रखने की क्षमता उस में हो । इस सम्बन्ध में ऋग्वेद में इस प्रकार उपदेश किया गया है :–

राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे श्रृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना ।
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् ।। ऋग्वेद२.३२.४ ।।

मन्त्र कहता है कि मैं उस स्त्री को बुलाता हूँ, उस स्त्री का आह्वान करता हूँ, जो पौर्णमासी के समान सदा प्रसन्न वदना हो अर्थात् जिस प्रकार पौर्णमासी को सब ओर आनंद ही आनंद दिखाई देता है, सब सब लोग प्रसन्न ही प्रसन्न दिखाई देते हैं, उस प्रकार ही हमारी स्त्रियाँ भी सब ओर प्रसन्नता बिखेरने वाली हों । हमारी स्त्रियाँ हमारे परिवार के सब सदस्यों को अपने उत्तम व्यवहार से आहलादित करने वाली हों, सब पर खुशियाँ बिखेरने वाली हों । हमारे परिवार की स्त्रियाँ सदा सुमधुर अथवा अत्यधिक मधुर वाणी बोलने वाली हों । उनकी वाणी में इस प्रकार की मधुरता भरी हो कि जिसे सुनने मात्र से ही हृदय आहलादित हो जावे, जिसे सुनने मात्र से ही मन रूपी कमल प्रसन्नता से खिल जावें। मन्त्र कहता है कि सब ओर प्रसन्नता बिखेरने वाली तथा सब को प्रसन्न रखने वाली इस स्त्री के लिए अत्यंत सुन्दर शब्दों से, अत्यंत आदर के साथ मैं बुलाता हूँ, उसका आहवान करता हूँ ।

मन्त्र आगे उपदेश करते हुए हमें कह रहा है कि इस प्रकार सब ओर आनंद की, सब ओर प्रसन्नता की वर्षा करने वाली, उत्तम ज्ञान की स्वामी, उत्तम वेद ज्ञान की अधिकारी, सब प्रकार के धर्मों का पालन करने वाली, सब प्रकार के सौभाग्यों की वर्षा करते हुए, न केवल स्वयं ही अपितु हमें भी सौभाग्यशाली बनाने वाली यह देवी हमारे वचनों को सुने, हमारी प्रार्थना को सुने । वह हमारे उद्‌बोधन को न केवल सुने अपितु अपने आत्मा से इसे समझे भी । हमारी यह सौभाग्यशाली देवी माता उस सुई से परिवार को सीने का, बांधने का काम करे, जो सुई कभी न टूटने वाली हो । भाव यह है कि जिस भी औजार का यह स्त्री परिवार को बांधने के लिए प्रयोग करे, वह औजार सर्वदा अटूट हो, कभी न टूटने वाला हो । इस प्रकार वह परिवार को बांधने के कार्य को करते हुए उसे स्थायित्व प्रदान करे, इस प्रकार से बांधे, इस प्रकार से इस की सिलाई करे कि यह परिवार फिर कभी टूटने न पावे। इस प्रकार परिवार

को एक सूत्र में बांधने के लिए जो सीने व पिरोने का यह कार्य करती है, यह कार्य हमारी यह देवी अत्यंत प्रेम से तथा अत्यंत प्रसन्नता से करे । इस कार्य को करने में वह अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव करे।

मन्त्र आगे उपदेश करते हुए कह रहा है कि हमारी यह देवी इस प्रकार की संतान को जन्म दे जो परिवार को अत्यधिक सुख देने वाली हो तथा अत्यंत वीर भी हो। पुरुषार्थी प्राणी सदा अपने पुरुषार्थ से इतना कमा लेता है, जिससे न केवल वह अपना तथा अपने परिवार का ही भरण-पोषण कर सकता है अपितु अन्य लोगों की सहायता करने में भी सक्षम होता है और यह पुरुषार्थी व्यक्ति पुरुषार्थ के साथ-साथ वीर भी होता है तो, वह अपनी तथा अपने परिवार की सब प्रकार से रक्षा तो करता ही है, इसके साथ ही साथ अपने मित्रों, नगर तथा देश का रक्षक भी बनता है । इसलिए मन्त्र ने उपदेश किया है कि इस माता से ऐसी उत्तम संतान पैदा हो, जो पुरुषार्थ करने वाली तो हो ही, इसके साथ ही साथ वीर भी हो ।

इस सब का भाव यह है कि मन्त्र के अनुरूप हमारी स्त्रियाँ पौर्णमासी के समान सदा प्रसन्न रहने वाली तथा सब को प्रसन्न रखने वाली हों । प्रसन्न रहते हुए सदा उतम भाषण करते हुए तथा अपने उतम व्यवहार से सब को प्रसन्न करने वाली हों । वह सदा मधुर वचनों के प्रयोग से उच्चारण करते हुए धर्म पर आचरण करें । सीना - पिरोना आदि जो भी गृहकार्य हैं उन सब को अति प्रेम से करने वाली हों तथा इन कार्यों को करने में उसे प्रसन्नता अनुभव हो। माता के लिए यह भी आवश्यक है कि जिस संतान को वह जन्म दें, वह संतान सब ओर से प्रशंसा प्राप्त करने वाली हो, जो प्रसन्नता उसके प्रशंसनीय कार्यों से मिलती है। यह संतान दान करने में भी न केवल सक्षम हो अपितु दान करने में भी आनंद का अनुभव करने वाली हो।

इस प्रकार यह मन्त्र श्रेष्ठ संतान उत्पन्न करने का उपदेश देता है । मन्त्र स्पष्ट संकेत कर रहा है कि हमारी स्त्रियाँ सब प्रकार के वेदोक्त कर्मों के पालन करने में सर्वदा समर्थ हों । यदि वह वेदोक्त आदेशों के पालन में समर्थ होगी तो निश्चय ही वह अपने परिजनों को सदा प्रसन्न रखने में सक्षम होंगी, उसकी सुई सदा अटूट रहते हुए परिवार को संगठन के बंधन में बांधने व पिरोने में सफल होगी तथा वह इस प्रकार की संतान को जन्म देगी जो पुरुषार्थी होने के कारण बहुत से धनों का स्वामी बन कर अत्यधिक प्रसन्न रहते हुए सदा दान देने में ही प्रसन्नता अनुभव करेगी ।

१०४-१, शिप्रा अपार्टमेंट
कौशाम्बी-२०१०१०
गाजियाबाद
चलभाष-०९७१८५२८०६८

—o—

।। ओ३म् ।।

संसार में सुख शान्ति का एक मात्र मार्ग उत्तम चरित्र निर्माण

पं० उम्मेद सिंह 'विशारद'
वैदिक प्रचारक

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जगत में सुख शान्ति के लिए संस्कार, विधि की रचना करके जन्म से मृत्यु तक, सोलह संस्कारों को करने का विधान किया है । वह कहते हैं जिससे करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं । और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

जीवात्मा अमर तथा नित्य है । जन्म जन्मान्तरों में उसके साथ सूक्ष्म शरीर मृत्यु पर्यन्त रहता है। और यही सूक्ष्म शरीर जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों या वासनाओं का वाहक होता है। ये संस्कार शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के होते हैं । जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करता है उसको नई परिस्थिति के भी बहुत से शुभाशुभ प्रभाव मिलते हैं ।

उनके बुरे प्रभावों को अभिभूत करने तथा शुभ प्रभावों को उन्नत करने के लिए संस्कारों या स्वच्छ वातावरण की परम आवश्यकता है ।

पन्चस्वन्तः पुरूष आ वियेश (यजुः)

इस लेख द्वारा आज हम मनुष्य के पांच मौलिक चरित्रों पर विचार करके जीवन में उतारने की प्रेरणा करते हैं । मानव को उत्तम स्वभाव बनाने के लिए सर्व प्रथम पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए । सम्पूर्ण मानव जगत पांच के भीतर स्थित है । प्रत्येक जहां अपने आप में प्रविष्ट है, विश्व में प्रविष्ट है । प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है, किसी परिवार का अंग है, किसी समाज का अंग है, किसी समाज का सदस्य है, राष्ट्र का सदस्य है । विश्व का सदस्य है । परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का नागरिक होने से उसके रिश्ते नाते में कई भूमिकाएँ हैं । उनको तभी निभा सकता है जब अपने संस्कारों में पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन करें । यदि प्रत्येक मनुष्य इन चरित्रों को अपनाने में अपनी भूमिका अदा करे तो मानव समाज में चारों ओर सुख शान्ति बनी रहेगी। आइए इन पांच चरित्रों पर विचार करते हैं।

उत्तम चरित्र की पांच शाखाएँ हैं

१. वैयक्तिक चरित्र २. पारिवारिक चरित्र ३. सामाजिक चरित्र ४. राष्ट्रीय चरित्र ५. विश्व चरित्र

इन चरित्रों के निर्माण व व्यवहार से मानव सच्चे अर्थों से समाज का निर्माण करता है और धर्मात्मा वही है जो उक्त चरित्रों का पालन करता है। यदि किसी में इनका अभाव है तो वह अधर्मी है ।

१. वैयक्तिक चरित्र–इस चरित्र का सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से है और यह 'व्यक्तिगत

चरित्र ही परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में सहायक होते हैं। इसके उन्नति व निर्माण के लिए सात गुण अति आवश्यक है ।

१. सुश्रुति - अर्थात सदैव अपने दैनिक आचरण में सुविचारों को ही ग्रहण करना।

२. सुवाणी - अर्थात सत्यवाणी, मधुरवाणी, संयतवाणी, निर्मलवाणी का प्रयोग करना ।

३. सुस्नेह - अर्थात परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व के प्रति सुस्नेह रखना।

४. सुसंयम - अर्थात प्रत्येक कार्य में स्वयं में संयम रखकर व्यवहार करना ।

५. निर्लोभी - अर्थात लोभ की भावना का त्याग व निस्वार्थ कार्यों की प्रबलता।

६. सुसेवा - अर्थात जीवन के विचारों को परहित सुसेवा में प्रधानता देना ।

७. निस्वार्थी - अर्थात प्रत्येक कार्य में अपना स्वार्थ न देखकर परमार्थ रखना ।

ये सात गुण उत्तम चरित्र के मूलाधार हैं और प्रत्येक मनुष्य को अने व्यक्तित्व के लिए इन सप्त गुणों पर आधारित होना चाहिए, यदि परवार का प्रत्येक सदस्य उक्त आचरणों के संस्कार बना लें तो परिवार व समाज व राष्ट्र में सर्व उन्नति होगी ।

शिष्ट व्यक्ति अष्टिता का उत्तर शिष्टता से देता है, अभद्रता का भद्रता से, अपमान का मान से, बुराई का भलाई से, अन्याय का न्याय से उत्तर देता है ।

व्यक्तिगत उत्तम चरित्र सभी मनुष्यों के लिए अनिवार्य है ।

२. **परिवारिक चरित्र**–यदि व्यक्तिगत चरित्र उत्तम है पारिवारिक समूह का भी उत्तम होगा, परिवार के चरित्र में क्रोध, मनमुटाव, रुष्ट होना, और बोलचाल बन्द करने का कोई स्थान नहीं है । प्रत्येक सदस्य को एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए, एक दूसरे की भावनाओं की कदर करनी चाहिए । एक दूसरे की उन्नति में सहायक होना चाहिए । परिवार में शारीरिक उन्नति, मानसिक और आत्मिक उन्नति के कार्य करने चाहिए, सारे परिवार को सत्य, ईश्वर, ईश्वरीय वाणी वैदिकधर्मी, व वैदिक संस्कारों वाला होना चाहिए ।सबको परिवार में मधुर भाषा का प्रयोग करना चाहिए । खानपान सात्विक होना चाहिए । यह गुण परिवार के प्रत्येक सदस्य के संस्कारों में तभी आ सकते हैं जब परिवार के प्रत्येक सदस्य का व्यक्तिगत चरित्र उत्तम होगा ।

३. सामाजिक चरित्र–मानव सामाजिक प्राणी है, इसे हर कदम पर प्रत्येक वस्तु के लिए एक दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात हम एक दूसरे के ऋणी रहते हैं । सर्व हितकारी नियम पालन करना चाहिए। सबको अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए । सामाजिक चरित्र तभी उन्नत होगा जब निम्न पांच नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक, सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक संस्थाएँ करते हों ।

जैसे :- १. अहिंसा - मन वचन कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुंचाना ।

२. सत्य : प्रत्येक कृत्य और व्यवहार में सदैव सत्य का पालन करना ।

३. अस्तेय - किसी को भी धोखा देकर दूसरे की वस्तुओं को न लेना, अर्थात झूठ न बोलना ।

४. ब्रह्मचर्य - सभी नागरिकों को सदाचारी होना ।

५. अपरिग्रह - आवश्यकता से अधक धन व सम्पत्ति न जोड़ना तथा लोभ न करना ।

अर्थात मनसा, वाचा, कमर्णा से सबको एक होना चाहिए । मानव समाज की इकाई है व बुनियाद है इसलिए सामाजिक सेवा में सामाजिक उन्नति में समाज के नियमों का पालन तथा परहित के नियमों का पालन समझदारी की भावना से करना चाहिए ।

उदाहरण :–हमे याद रखना चाहिए कि हम सदैव समाज के ऋणी होते हैं । उदाहरण रूप में ले लीजिए हम एक कप चाय पीते हैं तो कितने लोगों के सहयोग से पीते हैं। किसी ने चाय के बगीचे में चाय की पत्तियां तोड़ी, किसी ने सुखाई तो किसी और ने तैयार की, किसी ने खेत में गन्ना बोया, किसी ने चीनी तैयार की, किसी ने दूध उत्पादन किया, किसी ने बनाकर पिलाई । अब आप देखिये हम दैनिक जीवन में कितनी वस्तुओं का प्रयोग करते हैं । एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं अर्थात हम प्रत्येक क्षण समाज के ऋणी रहते हैं ।

४. राष्ट्रीय चरित्र–मातृभक्ति, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रनिष्ठा, राष्ट्रसेवा, राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना सदैव राष्ट्र की उन्नति के कार्य करना ये सब राष्ट्र प्रगति के साधन है। हमारे सर्व प्रथंम और सर्वश्रेष्ठ कार्य व कर्तव्य मातृभूमि की रक्षा करना है । राष्ट्र रक्षा हेतु जिन वीरों ने बलिदान किये हैं, तथा जिन समाज सेवियों ने राष्ट्र के लिए उत्तम कार्य किये हैं उनका स्मरण, अनुकरण, सम्मान करना चाहिए। अर्थात राष्ट्र की समृद्धि, स्वच्छ विचार, समान अधिकार, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रप्रेम और सर्व हितकारी नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है ।

५. विश्व चरित्र–अन्तरराष्ट्रीय नीति में शुद्धता, विदेश नीति का पालन, राष्ट्र की मर्यादा को अक्षुण्ण बनाने हेतु संयुक्त राष्ट्र सभा में अपने राष्ट्र की उत्तम नीतियों को स्पष्टता से रखना, राजनीतिक सम्बन्धों को मधुर बनाना, सर्वहितकारी वार्ता द्वारा राजनैतिक समझौते करना संयुक्त राष्ट्र सभा के नियमों का पालन करना ।

युद्धनीति के बजाए, आपसी सहमति से शान्ति स्थापित करना तथा आयात निर्यात वस्तुओं पर सन्तुलन सर्वहित में बनाकर रखना तथा छोटे से छोटा और बड़े से बड़े राष्ट्र का सम्मान करते हुए सर्वहित नियमों का पालन करना । ये सभी गुण अन्तरराष्ट्रीय जीवन में प्रत्येक राष्ट्र को सुखद बनाते हैं।

गढ़ निवास मोहकमपुर,
देहरादून उत्तराखण्ड
मो० : ९४११५१२०१९
९५५७६४१८००

—o—

सशस्त्र क्रान्ति के जाज्वल्यमान हस्ताक्षर- अमर शहीद सुखदेव

–प्रो० ओमकुमार आर्य
वैदिक प्रवक्ता, जीन्द

उन्नीसवी शताब्दी के महापुरुषों में सर्वाधिक प्रखर राष्ट्रवादी, भारत के भव्य अतीत की महिमा के गायक, निर्भीक विचारक, लेखक, वक्ता एवं भारतीय स्वाधीनता के स्वप्न द्रष्टा थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। उन्हीं के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व एवं कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' से प्रेरणा प्राप्त करके हजारों-२ युवक सर पर कफन बांधकर स्वाधीनता-संग्राम में कूद पड़े थे और राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिये एक ऐसा तूफान खड़ा कर दिया था जिसने न केवल आततायी, अन्यायी, बर्बर, क्रूर ब्रिटिश सत्ता की चूलें ही हिलाई बल्कि अन्तोगत्वा इस जालिम विदेशी हकूमत को भारत की पावन धरती से समूल उखाड़ फेंका था। इन क्रांतिकारियों की प्रथम पीढ़ी में जहां श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपत राय, अमरहुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, स्वातंत्र्य वीर सावरकर आदि सर्वाग्णी थे वहीं बाद की पीढ़ी में रामप्रसाद 'बिस्मिल', अशफाक उल्ला खाँ, खुदीराम बोस,चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, भगत सिंह आदि विशेष उल्लेखनीय नाम हैं । विदेशों में जाकर गोरी सरकार के विरुद्ध भारी जनमत तैयार करने वाले और 'आजाद हिन्द सेना' को लेकर अंग्रेजों को सीधी चुनौती देने वाले जन-जन के हृदय सम्राट नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की भूमिका को भी कोई भुला नहीं सकता । इन बलिदानी वीरों की लम्बी सूची में से हमारे इस लेख के चरित नायक हैं शहीद सुखदेव, मई १५, २०१७ को जिनकी ११० वीं जयन्ती थी । जयन्ती हो चाहे बलिदान-दिवस अपने शहीदों को स्मरण करना, श्रद्धांजलि देकर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करना हमारा नैतिक ही नहीं पावन पुनीत राष्ट्रीय कर्त्तव्य है । उसी कर्त्तव्य का निर्वहण प्रस्तुत लेख के माध्यम से मैं भी कर रहा हूँ ।

सुखदेव का जन्म मई १५, १९०७ को लुधियाना जिले के गांव नौघराँ (सुखदेव का ननिहाल) में हुआ था। माँ हलादेवी और पिता श्री रामलाल के आंगन का यह दीपक एक दिन देश को आजादी का पथ प्रशस्त एवं प्रकशित करेगा, इसके फौलादी व्यक्तित्व से टकराकर ब्रिटिश सत्ता चूर-२ हो जाने के कगार पर पहुंच जायेगी इसकी कल्पना शायद, किसी ने नहीं की होगी । किन्तु यह भी सत्य है कि बचपन और फिर किशोरावस्था में ऐसे लक्षण दिखने लग गये थे कि अवश्य ही एक दिन अपने साथियों के साथ मिलकर सुखदेव अंग्रेजों के लिये एक चुनौती बनेगा और उनकी ईंट से ईंट बजा देने में कोई कसर नहीं छोड़ेगा । जब सुखदेव मात्र तीन साल के थे तभी पिता का साया उनके सर से उठ गया। उनके ताया लाला अचिंतराम ने उनका बड़े लाड़ चाव से पालन पोषण किया । यह संयुक्त परिवार की परंपरा को ही श्रेय जाता है कि पति विहीना हलादेवी के लिये सुखदेव का लालन पालन कभी कोई समस्या नहीं बना । ताया अचिंत राम, बड़ी बहन गौराँ (ताया की पहली पत्नी से) चाचा बलिराम, अन्य भाई बहन, इन सबके कारण न कभी माँ को न सुखदेव को कभी किसी चिंता का सामना करना पड़ा। काश, आज भी हमें संयुक्त परिवार रूपी विशाल वट वृक्ष की तापरोधी शीतल सुखद छाया प्राप्त रहती तो व्यक्ति अकेले-अकेले आधि, व्याधि, ताप, संताप की दाहक अग्नि में यूं न झुलसता ।

अचिंत राम अपने परिवार सहित (थापर परिवार) लुधियाना से लायलपुर आ गये थे । वहीं सुखदेव की प्रारंभिक शिक्षा हुई। वे, चूँकि सारे परिवार के लाडले एवं चहेते थे, नतीजतन जिद्दी एवं अड़ियल स्वभाव के बन गये थे। जो मन में ठान लेते उसे पूरा करके ही दम लेते थे । वे दृढ़ इच्छा-शक्ति के धनी थे, सेवाभाव, परोपकार भाव, परदुःख कातरता, चयनित लक्ष्य के प्रति एकाग्रता, अपने ध्येय की प्राप्ति हेतु सर्वस्व दांव पर लगा देने की तत्परता आदि उनके सहज,स्वाभाविक गुण थे। लड़कपन में उनके एक सहपाठी हीरानन्द को कुछ दादा किस्म के लड़के बहुत परेशान किया करते थे, डर के मारे हीरानंद ने स्कूल आना भी छोड़ दिया था । जब सुखदेव को पता चला तो वे दादागिरी करने वाले लड़कों से अकेले ही भिड़ गये, उनको बुरी तरह से पीटा, उनको तभी छोड़ा जब उन्होंने पैरों पड़कर माफी मांगी और हीरानन्द को भविष्य में कभी भी तंग न करने की कसम खाई ?

सेवा भाव इसी घटना से स्पष्ट हो जाता है कि पड़ौस में रहने वाली चाची रहिमम नेलन के घर छाछ वे स्वयं पहुंचा आते थे ताकि चाची को आने जाने की परेशानी न झेलनी पड़े ।

पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य बहुत सारी पुस्तकें पढ़ना उनका शौक था। महापुरुषों की जीवनियां, क्रांति सम्बंधी पुस्तकें, विभिन्न देशों के इतिहास उनके अध्ययन के प्रिय विषय थे । ब्रिटिश सरकार भारतीयों पर जो अमानवीय अत्याचार, बेरहम शोषण, और हर पल जो क्रूर, बर्बर व्यवहार कर रही थी उससे सुखदेव बहुत दुःखी थे, अंग्रेजों के विरुद्ध प्रतिशोध की ज्वाला उनके मन में प्रचण्ड से प्रचण्डतर होती जा रही थी । इसीलिये तो एक दिन विधवा माँ हलादेवी ने जब चांद सी दुल्हनिया का सपना देखते हुये, सुन्दर सलोने पोता, पोती को गोद खिलाने की कल्पना में डूबते हुये सुखदेव से कहा था कि बेटा विवाह की हामी भर लो मेरा जन्म सफल हो जायेगा । तब सुखदेव ने कहा था—

'माँ, मैं घोड़ी पर नहीं, फाँसी पर चढ़ूँगा ।' ये शब्द सुनकर माँ सन्न रह गयीं और भविष्य में क्या होने वाला है उसका डरावना संकेत माँ को मिल गया था। आगे का घटनाचक्र कुछ इस प्रकार से चला कि सुखदेव क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आकर पूरी तरह से क्रांति-पथ का पथिक बन गया, अंग्रेजों के विरुद्ध सुनियोजित सशस्त्र क्रांति का प्रबल पक्षधर बनकर उस मञ्जिल की ओर बढ़ चला जहाँ पहुँचने वाला अपने प्राण मातृभूमि की बलिवेदी पर सहर्ष निछावर कर देता है और इतिहास के पृष्टों पर सशस्त्र क्रांति, अन्याय के विरुद्ध शंखनाद, दासता की बेड़ियों को चकनाचूर करदेने वाले एक सुलगते, धधकते जाज्वल्यमान हस्ताक्षर के रूप में सदा-सदा के लिये अमिट बनकर अंकित हो जाता है ।

सन् १९२० के बाद का सुखदेव का जीवन इतना घटना-संकुल रहा है कि उन समस्त घटनाओं का समावेश तो इस लघु लेख के सीमित से कलेवर में नहीं किया जा सकता किंतु कुछेक घटनायें अवश्य दी जा सकती हैं जो स्पष्ट दर्शाती है कि अपनी मातृभूमि की स्वाधीनता के लिये किस प्रकार सशस्त्र क्रान्ति का प्रबल पक्षधर यह जुझारू योद्धा अपने अन्य साथियों के संग मिलकर अंग्रेज सरकार से दो-दो हाथ करता रहा, हमें दास बनाने वालों की जड़ों पर कुठाराघात करता रहा और अन्ततः दीपक पर पतंगे की तरह देश की आजादी के लिये मर मिटा। सुखदेव और उनका भाई (ताया का लड़का) जयदेव जुलाई १९२२ में 'नैशनल कॉलेज' लाहौर में प्रविष्ट हुये और छात्रावास में रहने लगे । यहाँ रहते हुये उनकी घनिष्ठता क्रातिकारियों से बढ़ती गई जैसे सरदार भगतसिंह, बी. के. दत्त, भगवत्ती

चरण वर्मा, जयगोपाल, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद आदि । ये सब उनके विश्वसनीय साथी थे किंतु भगतसिंह के साथ तो उनका वस्तु और परछाई वाला संबंध था वे भगत सिंह के दायाँ हाथ थे । दोनों के विचार, सोच, कार्यशैली और व्यवस्था परिवर्तन के पश्चात् का लक्ष्य क्या हो आदि के विषय में वे एकमत थे । सामान्यतः सभी क्रांतिकारी और विशेषतः सुखदेव तथा भगत सिंह - 'कण्टके न कण्टकम्' शठे शाठयं समाचरेत्, थप्पड़ के बदले में घूंसा, की नीति में विश्वास रखते थे । वे मानते थे कि अहिंसा की निरर्थक रट, सत्याग्रह, असहयोग आंदोलनादि ये सब अंग्रेज सरकार के हाथ मजबूत करते हैं और क्रांतिकारियों के आन्दोलन को कमजोर करते हैं । इस सन्दर्भ में इतिहास-सम्मत यह तथ्य भी द्रष्टव्य है कि अहिंसावादियों के प्रति ब्रिटिश सत्ता का रवैया सदैव नरम रहा जब कि क्रांतिकारियों के प्रति सदैव कठोरतापूर्ण, क्रूर, निर्मम, दमनकारी रहा । कोई न कोई कारण तो रहा होगा कि यह अन्तर क्यों था ?

भगत सिंह ने अच्छी तरह से समझ लिया था कि सुखदेव एक भरोसेमन्द साथी, कुशल संगठनकर्त्ता, विवेकशील संयोजक, समन्वयक, अचूक रण-नीतिकार, बनाई हुई योजनाओं को सटीक रूपेण क्रियान्वित करने में सिद्धहस्त महारथी थे । वे क्रांतिकारियों के सहयोद्धा तो थे ही, इसके अतिरिक्त जैसे श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी थे उसी प्रकार सुखदेव भी स्वाधीनता-समरांगण में क्रांतिकारियों के कुशल सारथी थे । उदाहरणार्थ चाहे ३० अक्तूबर १९२८ को 'साईमन गो बैक' का प्रदर्शन हो, प्रदर्शन के दौरान लाठी-प्रहार के फलस्वरूप पंजाब केसरी लाला लाजपत राय का १७ नवम्बर १९२८ को निधन (वस्तुतः बलिदान) होना और एक महीने के भीतर लाहौर पुलिस के एस०पी० स्कॉट तथा डी०एस०पी० साण्डर्स को मौत के घाट उतारना हो और फिर लाहौर से बाहर निकलना हो, चाहे ८ अप्रैल १९२९ को तत्कालीन संसद (नैशनल एसैम्बली) में भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त के द्वारा 'ट्रेड डिस्प्यूट एक्ट' (Trade Dispute Act) और 'पब्लिक सेफ्टी बिल' (Public Safety Bill) के विरोध में बम धमाका करके पर्चे फैंकना, अपनी गिरफ्तारी देना हो, इन सबकी योजना और रणनीति सुखदेव के उर्वरा मस्तिष्क की ही उपज थी । सुखदेव चाहते थे कि इस प्रकार वे अपनी बात जनता तक पहुँचायें, अंग्रेजों के विरुद्ध वातावरण तैयार करें । जब राजगुरू, सुखदेव और भगत सिंह पर मुख्यतः लाहौर षडयन्त्र केस (साण्डर्सवध १७ दिसम्बर १९२८) को लेकर मुकदमा चला तो उनकी हार्दिक इच्छा थी कि उन्हें फांसी की सजा मिलें ताकि जन-मन-काआक्रोश, सहानुभूति की भावना एक भयंकर सैलाब बन कर उमड़े और ब्रिटिश सत्ता को अपने साथ बहा ले जाये, इसका सफाया करदे और भारत स्वतंत्रता का सुनहला सूर्योदय देखें । सारे कानून कायदे और फांसी संबंधी रीति नीति का निन्दनीय उल्लंघन करते हुये निर्लज्ज गोरी सरकार ने राजगुरु, सुखदेव, भगतिसंह तीनों को २३ मार्च १९३१ को सायं लगभग ७.३० बजे फांसी चढ़ा दिया और उसी रात फिरोजपुर के निकट सतलुज किनारे उनकी टुकड़े-टुकड़े की हुई लाशों को मिट्टी का तेल डालकर जला दिया और अवशेषों को सतलुज नदी में बहा दिया । आसपास के ग्रामीणों ने बड़ी हिम्मत करके कुछ अवशेष दहन-स्थल से एकत्र किये, नदी में से निकाले और उस स्थान पर मातृभूमि की गोद में रख दिये जहाँ इन तीनों बलिदानी वीरों की समाधियाँ बनी हुई हैं ?

हम अमर शहीद सुखदेव की ११०वीं जयन्ती के अवसर पर इन तीनों को श्रद्धा से नमन करते हैं किंतु चूंकि जयन्ती शहीद सुखदेव की है जो अन्यों की तरह ही सशस्त्र क्रांति के चमकते् दमकते हस्ताक्षर थे और आज भी हैं, ब्रिटिश सरकार के लिये महाकाल से न्यून नहीं थे । उनकी विशेष आदरांजलि इन शब्दों में :—

सुखदेव, तुम्हें शत बार नमन ।
हार्दिक स्तवन, अभिनन्दन ॥
तुम जैसे वीरों के बलिदानों से—
आजाद पवन, आजाद गगन, आजाद वतन ।
कृतज्ञ राष्ट्र करता तुम्हें सश्रद्ध नमन ॥
सुखदेव, तुम्हें शत बार नमन

फोन : ९४१६२९४३४७
०१६८१-२२६१४७

पटियाला चौक, जीन्द
(हरियाणा)-१२६१०२

—०—

विश्व वेद सम्मेलन के आयोजन हेतु विचार संगोष्ठा

दिनांक ३ जुलाई २०१७ को गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली में विश्व वेद सम्मेलन के संदर्भ में एक संगोष्ठी आयोजित की गई । इस बैठक में स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री प्रकाश आर्य, श्रा विनय आर्य, कप्टन रूद्रसन सिन्धु, प्रो० विट्ठलराव आर्य, श्री अजय सहगल, श्री रविदेव गुप्ता, श्री चतर सिंह नागर, प्रो० सुधीर कुमार, प्रो० धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री केशव कुमार आदि आर्य संन्यासी, नेता एवं विद्वानों ने भाग लिया।

इस बैठक में अभी तक सम्मेलन के सम्बन्ध में तैयारियों की समीक्षा की गई एवं यह निर्णय लिया गया कि यह सम्मेलन दिनांक १५, १६, १७ दिसम्बर, २०१७ को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, १ जनपथ, इण्डिया गेट के पास नई दिल्ली में सम्पन्न होगा। इस वैदिक सम्मेलन में विद्वानों द्वारा शोध पत्रों के माध्यम से वैश्विक समस्याओं के वैदिक समाधान को प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक दोनों प्रकार से प्रस्तुत किया जाएगा । शोध पत्रों एवं वैदिक विद्वानों के चयन हेतु स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में शोधपत्र चयन समिति का गठन किया गया ।

इस सम्मेलन के माध्यम से बैठक में इस बात पर भी सहमति बनी कि विश्व के समक्ष वर्तमान चुनौतियों यथा-गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अशिक्षा, जलवायु परिवर्तन, आर्थिक विषमता आदि समस्याओं का वेदसम्मत समाधान प्रस्तुत किया जाय तथा वेद के वैज्ञानिक पक्ष को उजागर किया जाए। उपरोक्त समस्याओ के समाधान हेतु संयुक्त राष्ट्र भी कृत संकल्प है ।

इस सम्मेलन के माध्यम से महर्षि दयानन्द, आर्य समाज एवं वैदिक संस्कृति को विश्व पटल पर स्थापित करने का प्रयास किया जायेगा ।

कृते :—

डॉ० आनन्द कुमार (पूर्व आई०पी०एस०)
संयोजक—विश्व वेद सम्मेलन

मो. : ०९८१०७६४७९५

(पृष्ठ २ का शेषांश)

शुद्धि संस्कार

१. दिनांक २४-०६-२०१७ को सैयदा सुलक्षणा चटर्जी सिराज आयु ३४ वर्ष ने स्वेच्छा से इस्लाम मत त्यागकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इनका शुद्धि संस्कार आर्य समाज के यज्ञशाला में आर्य समाज के पुरोहित पं० देवनारायण तिवारी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। शुद्धि के बाद उनका नाम सुलक्षणा चटर्जी रखा गया।

२. दिनांक २६-०७-२०१७ को जियारा खातून आयु १९ वर्ष ने स्वेच्छा से इस्लाम मत त्यागकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। इनका शुद्धि संस्कार पं० कृष्णदेव मिश्र के द्वारा आर्य समाज की यज्ञशाला में सम्पन्न हुआ। शुद्धि के बाद उनका नाम श्रेया दत्ता रखा गया।

शोक-प्रस्ताव

१. गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के पूर्व कुलपति डॉ० धर्मपाल आर्य जी का आसमयिक देहावसान ०९-०७-२०१७ को दिल्ली में लगभग ७२ वर्ष की आयु में हृदय गति रूक जाने के कारण हो गया है। आर्य समाज कलकत्ता के दिनांक १६-०७-२०१७ के रविवारीय साप्ताहिक सत्संग पर उपस्थित समस्त आर्य जनों ने डॉ० धर्मपाल आर्य जी को निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की।

—०—

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

इस हेतु ईश्वर सर्वप्रिय है, प्राण का भी प्राण है ।
तद्हेतु उस परमात्मा का 'प्राण' भी इक नाम है ॥
ऐसे प्रमाणों को निरख सब अर्थ करना चाहिए ।
जो उचित हो जैसा जहाँ वह ही समझना चाहिए ॥३२॥
जैसे बताते शास्त्र अरु सब व्याकरण के ग्रन्थ हैं ।
ऋषि और मुनियों के कथन भी एक निश्चित पन्थ हैं ॥
प्रकरण विशेषण औ नियम पूर्वक करें जब अर्थ को ।
तब हो न व्यर्थ विवाद, यह समुचित सदैव समर्थ को ॥३३॥

(क्रमशः.....)

आर्य समाज कलकत्ता के प्रकाशन

पुस्तक विक्रेता, आर्य संस्थाओं, उपदेशकों को ४० प्रतिशत की छूट दी जाती है।

पुस्तक का नाम	लेखक/सम्पादक	मूल्य
१. युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश-संदर्भ दर्पण (ऐतिहासिक संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश की यात्रा का दस्तावेज)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
२. स्वामी दयानन्द का राजनीति दर्शन (स्वामी दयानन्द के राजनीत दर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन)	डॉ० लाल साहेब सिंह	५०.००
३. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की देन (उन्नीस उत्कृष्ट निबंधों का संग्रह)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय द्वारा सम्पादित	१५[illegible]
४. त्रैतवाद का उद्भव और विकास (त्रैतवाद का उसके उद्भव और विकास के वैशिष्ट्य को स्पष्ट करने वाला दर्शन का शोधपूर्ण ग्रंथ)	डॉ० योगेन्द्र कुमार शास्त्री	[illegible].००
५. उपनिषद् रहस्य (ईश केन और प्रश्न उपनिषदों की सारगर्भित व्याख्या)	महात्मा नारायण स्वामी "सरस्वती"	२०.००
६. श्री श्री दयानन्द चरित	श्री सत्यबन्धुदास	१०.००
७. महर्षि दयानन्द की देन (निबन्धों का संग्रह)	आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा प्रकाशित	३०.००
८. धर्मवीर पं० लेखराम	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	५०.००
९. आनन्द संग्रह (स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज के उपदेशामृत)	वीतराग स्वामी सर्वदानन्दजी महाराज	२५.००
१०. भाई परमानन्द (बलिदानी वंश के कुलदीपक की अमर कहानी)	श्री बनारसी सिंह	१०.००
११. धर्म का आदि स्रोत	पं० गंगाप्रसाद जी	३०.००
१२. संकल्प सिद्धि (विचारों के संकल्प विकल्प का अनोखा चिन्तन)	स्वामी ज्ञानाश्रम	३०.००
१३. ज्योतिर्मय (श्रीयुत् टी. एल. वास्वानी द्वारा लिखित (Torch Bearer)) का हिन्दी अनुवाद	टी॰एल॰ वास्वानी	३०.००
१४. वेद-वैभव	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१५०.००
१५. कर्मकाण्ड	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१०.००
१६. स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान	ले० सत्यप्रिय शास्त्री	५०.००
१७. आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	८०.००
१८. मेरे पिता	इन्द्र विद्यावाचस्पति	५०.००
१९. वेद और स्वामी दयानन्द	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२०. व्यतीत के यश की धरोहर (म्हासम्मेलनों के संस्मरणात्मक आकलन)	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	६०.००
२१. Torch Bearer		३५.००
२२. पं० गुरुदत्त लेखावली	[illegible]ुरुदत्तजी 'विद्यार्थी'	२५.००
२३. प्रार्थना प्रवचन	[illegible] उमाकान्त उपाध्याय	५०.००
२४. सन्ध्यारहस्य एवं संध्या अष्टांग योग	प्रो० चमूपति एवं स्व० आत्मानन्द (एक जिल्द)	३०.००
२५. बंगाल शास्त्रार्थ	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	४०.००
२६. वेद में गोरक्षा या गोवध	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	५.००
२७. वेद रहस्य	महात्मा नारायण स्वामी जी	३५.००
२८. वेद वन्दन	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००
२९. राज प्रजाधर्म प्रबोधभाष्य	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	७०.००
३०. वेद-वीथिका	प्रो० उमाकान्त उपाध्याय	१६०.००

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कोलकाता - ६ के लिए **श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल** द्वारा प्रकाशित तथा एशोशियेटेड आर्ट प्रिण्टर्स, ७/२, विडन रो, कोलकाता-६ में मुद्रित।